## तृतीय अध्याय

# महादेवी जी की गद्य विधाएं

Chapter-3

## तृतीय अध्याय

# महादेवी जी की गद्य विधाएं

**महादेवी के संस्मरण**

संस्मरण हिन्दी गद्य की आधुनिकतम विधा है। जीवनी परक साहित्य का यह अत्यन्त ललित एवं लघु कलात्मक अंग है। जीव अभिव्यक्ति का यह रूप स्मरण पर आधारित है। कुछ विद्वानों की राय में इसका आगमन पश्चिम से हुआ है, किन्तु बात ऐसी है कि हमारे यहाँ इसका बीज रूप बहुत पहले से मिलता है। भारतीय काव्यशास्त्र में स्मरण अलंकार रूप में चिरकाल से प्रयुक्त होता रहा है। लेकिन आज संस्मरण एक विधा के रूप में प्रचलित है। इस विधा को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा का कथन है – 'अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति कला के माध्यम से संस्मरण होता है। संस्मरण यथार्थ होता है। इसमें संस्मरणकार के वे क्षण होते हैं, जो उसने स्वयं जिये हैं।'' पाश्चात्य विद्वान शिमले ने 'टेक्नीकल टर्म्स आव लिट्रेचर' में लिखा है कि संस्मरणकार संस्मरण में अपने से भिन्न उन व्यक्तियों, वस्तुओं और क्रियाकलापों आदि का संस्मरणात्मक चित्रण करता है जिसका उसे अपने जीवन में साक्षात्कार हो चुका है। डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत संस्मरण में व्यक्तित्व को अधिक महत्व देते हुए उनका कथन है– ''भावुक कलाकार जब अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशिष्टताओं से विशिष्ट बनाकर रोचक ढंग से यथार्थ रूप में व्यक्त करता है, तब उसे संस्मरण कहते हैं।'' स्वयं महादेवी जी ने संस्मरण के स्वरूप को परिभाषित नहीं किया है, परन्तु अपने संस्मरणों में वे 'स्मृति' को मूल तत्व के रूप में स्वीकार अवश्य करती हैं। 'अतीत के चलचित्र' में एक स्थल पर वे लिखती हैं – ''शैशव की स्मृतियों में एक विचित्रता है। जब हमारी भाव प्रवणता गम्भीर और प्रशांत होती है, तब अतीत की रेखायें कुहरे में से स्पष्ट होती हुई वस्तुओं के समान अनायास ही स्पष्ट से स्पष्टतर होने लगती हैं।'' महादेवी संस्मरणों को संस्कारों से सम्बद्ध मानती हैं। उनकी दृष्टि में ''अनुभूति की तीव्रता हमारे मनोजगत में कोई संस्कार छोड़ जाती

है और वह तीव्रता अनुभूत विषय में महत्वपूर्ण था तुच्छ होने पर निर्भर नहीं रहती।'' वस्तुतः संस्मरण जीवन के प्रत्येक अंग को स्पर्श करने वाले होते हैं, पर प्रत्येक संस्मरण लेखक के सम्मुख किसी-न-किसी विशेष क्षेत्र का परिवेश हुआ करता है। साहित्यकार किसी असाधारण व्यक्ति के जीवन की घटनाओं को साहित्यिक परिवेश में रखकर देखना चाहता है।[1] साहित्यकार जो कुछ भी लिखते हैं वह समूचे व्यक्ति के व्यक्तित्व का जीवन-दर्शन होता है। इसीसे संस्मरण की श्रेणी है।

संस्मरण के उपकरण :

1. वर्ण्य विषय,
2. पात्र योजना,
3. परिवेश,
4. भाषा शैली,
5. उद्देश्य।

**(1) वर्ण्य विषय** : संस्मरण में वर्ण्य विषय सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। संस्मरणकार जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना या जीवन-संपर्क में आए किसी अविस्मरणीय चरित्र की झाँकी प्रस्तुत करता है। महादेवी के संस्मरणों का वर्ण्य विषय उनके स्वानुभूति युक्त जीवन-यात्रा के अनेक तिक्त मधुर अनुभव हैं। उनके संस्मरण उनकी मानसिक चेतना के अभिन्न अंश बन गए हैं। इनके संस्मरणों के वर्ण्य विषयों में विविधता नहीं है, सर्वत्र एक मानवीय करुणा पर्याप्त है। लेकिन पात्रों की विविधता के आधार पर इनके वर्ण्य विषय के अनेक रूप इस प्रकार रेखांकित किए जा सकते हैं :

(क) नारी विषयक संस्मरण : ऐसे संस्मरणों में लेखिका युग-युग से शोषित और प्रताड़ित नारी जाति का वकील बनकर उपस्थित हुई है। इनकी दयनीय दशा पहाड़िन लछमा, जीवन पथ पर पराजित बिबिया, स्वाभिमानिनी भक्तिन के अन्तर्मन में क्रन्दन करने वाली बिट्टो, पतिव्रता वेश्या पुत्री मारवाड़िन बहू, वात्सल्य मूर्ति गुँगियाँ, उपेक्षिता सविया, निडर घीसा की माँ में प्रतिबिंबित है। ये सभी पात्र ग्रामीण, अशिक्षित, स्वामिभक्त, कर्म एवं जीवन से संघर्ष करने वाले पात्र हैं।

(ख) साधारण पुरुषों से सम्बन्धित संस्मरण : महादेवी के संस्मरणों का वर्ण्य विषय पूँजीपति वर्ग द्वारा सताए गए सामान्य पुरुषों की करुण गाथा भी है। इन पात्रों का यथावत चित्र लेखिका ने प्रस्तुत किया है। ग्रामीण स्वामिभक्त रामा, स्नेह से परिपूर्ण अन्धा अलोपी, चीनी फेरी वाला, जंगबहादुर तथा ठकुरी बाबा आदि मानवीय गुणों से सम्पन्न साधारण पुरुष हैं। महादेवी ने इन्हें बहन का स्नेह, माँ की ममता और वात्सल्य का अजस्र स्नेह दिया है। ये सभी पात्र पाठकों की ममता का विषय बन जाते हैं।

(ग) साहित्यकारों से सम्बद्ध संस्मरण : 'पथ के साथी' में महादेवी ने रवीन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, निराला, प्रसाद, पन्त, सियाराम शरण गुप्त के

बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व का मार्मिक और यथार्थ चित्र अंकित किया है। इन साहित्यकारों के व्यक्तित्व में उन्होंने करुणा का ऐसा समावेश किया है कि वे अविस्मरणीय बन गए हैं।

(घ) यात्रा–संस्मरण : इन संस्मरणों में कश्मीर एवं बद्रीनाथ की यात्राओं का वर्णन है। यात्रा–मार्ग की सुविधाओं–बाधाओं के वर्णन के साथ–साथ वहाँ के परिवेश का भी वर्णन होता गया है। वहाँ के रहन–सहन, विश्वास, अन्धविश्वास, आदि का सजीव चित्रण किया गया है। उनके ऐसे संस्मरण यात्रा–साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

(ङ) मानवेतर प्राणियों के संस्मरण : महादेवी के संस्मरणों का वर्ण्य विषय मात्र मानव ही नहीं है, अपितु मानवेतर प्राणी भी उनके विशाल, उदार हृदय का स्नेह पा सके हैं। 'मेरा परिवार' में इन भोले–भाले पशु–पक्षियों के प्रति जो संवेदना प्रकट की गयी है, वह अद्‌भुत हैं। पुस्तक की 'आत्मिका' में कुक्कुट–शावक के प्रति लेखिका की सहानुभूति व्यक्त हुई है। नीलकण्ठ, मोर, गिल्लू, सोना हिरणी, दुर्मुख खरगोश, गौरा गाय, नीलू कुत्ता, रोजी, निक्की और रानी पर जो कुछ महादेवी ने लिखा है वह अप्रतिम हैं। ये पशु–पक्षी किसी जादू–नगर के नहीं हैं, वे हमारे अपने जगत के हैं, उन्हें हम प्रतिदिन देखते हैं परन्तु उनका जीवन हमारी दृष्टि में उपेक्षित है। महादेवी ने अपनी सूक्ष्म संवेदनशीलता के द्वारा उनके जीवन का स्पर्श कर अनुभव किया है और उन्हीं को 'मेरा परिवार' के संस्मरणों में साक्षात् किया है।

महादेवी के संस्मरणों में संस्मरणीय का यथार्थ चित्रण हैं। अपने पात्रों के साथ निकटतम सम्पर्क स्थापित कर लेने से ही इतना जीवन्त चित्र उतार सकता है। अपने संस्मरणों में जिन–जिन विषयों को लेखिका ने उठाया है, वे पाठक को वास्तविक जीवन प्रतिदिन देखने को मिलते हैं। महादेवी ने हास्य–व्यंग्य, विनोद एवं विद्रूपता–करुणा आदि के समन्वय से अपने विषय को अत्यन्त सरल–सरस बना दिया है।[2]

महादेवी के संस्मरणों में संक्षिप्तता एवं तथ्यता का गुण विद्यमान है। इन संस्मरणों में न आरंभ है, न अन्त की कोई सीमा और न ही हम ऐसा कह सकते है कि यह संस्मरण अपूर्ण है।

**(2) पात्र–योजना** : गद्य की अन्य विधाओं की तरह संस्मरण का दूसरा तत्व पात्र–योजना है। संस्मरण में लेखक अपने जीवन से सम्बद्ध घटनाओं, व्यक्तियों के वर्णन खण्ड रूप में प्रस्तुत करता है। ऐसा करने में वह कभी–कभी अन्तर्मुखी हो जाता है। महादेवी में उच्चस्तरीय संवेदना है, इसलिए मानव के अलावा मानवेतर प्राणियों के चरित्रांकन में भी वे कुशल प्रमाणित होती हैं।

'पथ के साथी' में लेखिका ने अपने समय के साहित्यकारों के व्यक्तित्व को करुण अभिव्यक्ति की है।

महादेवी के नारी पात्र पुरुष पात्रों की अपेक्षा अधिक सशक्त हैं। उनके चित्रण में

लेखिका ने पर्याप्त रुचि ली है। वे विषय परिस्थितियों में भी कटु आघात सहकर अपने चरित्र को स्खलित नहीं होने देतीं। इन पात्रों के आंतरिक और वाह्य दोनों पक्षों का उल्लेख उन्हें जीवंतता प्रदान करने में सक्षम है। उनकी वेश-भूषा, आकृति, कृत्यों आदि के वर्णन के साथ-साथ उनके स्वभाव, शीलगुणादि की भी व्याख्या की गयी है।

आकृति-वर्णन के क्रम में महादेवी ने पात्रों की जो रूपरेखा प्रस्तुत की है उससे पात्रों का व्यक्तित्व साकार हो उठा है। महादेवी जी ने अपने पात्रों के वाह्य व्यक्तित्व के साथ उनकी वेश-भूषा का भी सजीव वर्णन किया है। कहीं-कहीं तो पात्रों के नामकरण द्वारा भी उनके चरित्र की विशेषता दर्शायी गयी हैं। सबिया के नाम की व्युत्पत्ति बताती हुई लिखती हैं – "सबिया न शबनम का संक्षिप्त है न शबरात का। वह हमारे पौराणिक सावित्री का अपभ्रंश है।" गुँगिया के नाम का परिचय देती हुई कहती हैं – "गुँगिया को यह उपनाम गूँगेपन के कारण मिला था। उसका नाम धनपतिया........ न वह माँ कह सकी न दादा, न उसके मुख से दुधू निकला न हप्पा। केवल ऐं-ऐं की विशेष ध्वनियों में उच्चारण करके मन के भाव व्यक्त करना जानती थी।" महादेवी ने पात्रों के क्रिया-कलापों के वर्णन द्वारा उनके चरित्र की अभिव्यंजना की है। भक्तिन के पाक-विज्ञान का परिचय देते हुए लिखा है – "रोटियाँ अच्छी सेकने के प्रयास में कुछ खरी हो गयी है, पर अच्छी हैं, तरकारियाँ भी पर जब दाल बनी है तब उनका क्या काम-शाम को दाल बना दी जाएगी। दूध-घी मुझे अच्छा नहीं लगता, नहीं तो सब ठीक हो जाता, अब न हो तो अमचूर और लालमिर्च की चटनी पीस ली जाए...... फिर वह कुछ अनाड़िन या फूहड़ नहीं।"

महादेवी ने अपने संस्मरणों में पात्रों के बाह्य व्यक्तित्व के साथ उनके आंतरिक विश्लेषण भी किए हैं। इनके पात्र जीवन में संघर्ष करने के लिए कटिबद्ध तथा कर्तव्यपरायण हैं। महादेवी अपने पशु-पक्षी पात्रों के आंतरिक विश्लेषण में भी दक्ष हैं। सोना हिरणी के विषय में कहती हैं – "पशु मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं, उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं, यह सत्य मुझे सोना से अनायास प्राप्त हो गया।"

महादेवी ने संस्मरणों में पात्रों का चरित्र-चित्रण कई शैलियों में किया है। वे पात्रों का चक्षुक बिम्ब प्रस्तुत कर देती हैं। उनके पात्र कम बोलते हैं, लेखिका स्वयं उनके चरित्र और व्यक्तित्व को स्पष्ट करती चलती हैं। जहाँ वे पात्रों को अधिक सहज-स्वाभाविक बनाने को आकुल हो उठी हैं, वहाँ वे संवादों की योजना कर देती हैं। इससे पात्रों के चरित्र स्वयं बोल उठते हैं।[3]

महादेवी वर्मा संस्मरण को बिलकुल भारतीय जमीन से जोड़कर देखने के पक्ष में हैं : 'संस्मरण में हम अपनी स्मृति के आधार पर से समय की धूल पोंछ-पोंछ कर उन्हें अपने मनोजगत के निभृत कक्ष में बैठाकर उनके साथ जीवित रहते हैं और अपने आत्मीय सम्बन्धों को पुनः जीवित करते हैं। इस स्मृति मिलन में मानो हमारा मन बार-

बार दोहराता है, हमें आज भी तुम्हारा अभाव है। मेरे संस्मरण उन सस्मरणीयों के स्मरण हैं जिनके अभाव की मुझे तीव्र अनुभूति होती है, चाहे वे मनुष्य हो चाहे पशु–पक्षी।'[4]

**(3) परिवेश :** संस्मरण में वास्तविकता का मान कराने में परिवेश का विशिष्ट स्थान है। परिवेश उन परिस्थितियों के समवाय का नाम है, जिनमें पात्र संघर्ष करते हैं। संस्मरण लेखक देशकाल की सीमाओं में अबद्ध होता है। महादेवी जी ने अपने संस्मरणों में जिन पात्रों को स्थान दिया है, उनकी परिस्थिति जन्य परिवेश का भी चित्रण किया है। पात्रों की करुणा से प्लावित हो वे समाज का चित्रण करती हैं। परिवेश को समझने के लिए कुछ बिन्दुओं पर संक्षिप्त में प्रकाश डालना आवश्यक है।

**देश–वर्णन :** महादेवी जी ने देश वर्णन में याथार्थता का परिचय दिया है। उनके संस्मरणों में ग्राम एवं नगर दोनों सहज रूप में चित्रित हैं। स्थानों के वर्णन में वे स्थान विशेष का भौगोलिक परिचय देती हैं। महादेवी जी ने अपने यात्रा–संस्मरणों में पर्वत–प्रदेश की सुषमा को अत्यंत स्वाभाविकता से चित्रित किया है।

**सामाजिक परिवेश :** सामाजिक परिवेश के अन्तर्गत महादेवी जी ने नारी की सामाजिक स्थिति का अपेक्षाकृत सशक्त वर्णन किया है। दरिद्रता में पिसती हुई, गृहकार्य में टूटती, बदले में शारीरिक प्रताड़ना की शिकार, परिवार के सदस्यों के व्यंग्यों, लांछनों, अपशब्दों को सहन करने वाली भारतीय नारी की दुरवस्था का अत्यन्त सजीव चित्रण मिलता है। इसका दायित्व वे पुरुष वर्ग को देती हैं। वह अपनी वासना पूर्ति के लिए नारी के जीवन से खिलवाड़ करता है और पाश्चात् मिट्टी के पात्र की भाँति ठुकरा देता है।[5]

**धार्मिक परिवेश :** महादेवी जी ने सामाजिक परिवेश की तरह धार्मिक परिवेश का भी यथार्थ अंकन किया है। जन सामान्य के अन्ध विश्वासों और रूढ़ियों के प्रति उनका व्यंग्य उनके इसी भाव को व्यक्त करता है। भक्तिन के संस्मरण में गुरु से कान फूँकवा कंठी पहने आदि का वर्णन ऐसा ही है।[6] बद्रीनाथ के मन्दिर का यथार्थ रूप देखने पश्चात् महादेवी जी ने भगवान के प्रति जनमानव मठाधीशों की आधुनिक धार्मिक परिवेश के उपर भी व्यंग्य किया है।

**आर्थिक परिवेश :** महादेवी जी ने अपने संस्मरणों में अपने पात्रों की आर्थिक स्थिति का सच्चा वर्णन किया है। नारियों की वेशभूषा, आभूषणों, पहनावा आदि से उनकी आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। यही नहीं, समकालीन साहित्यकारों की अर्थाभाव वाली जिन्दगी का भी यथार्थ चित्रण किया है।

**राजनीतिक परिवेश :** महादेवी जी ने प्रसंगानुकूल राजनीतिक परिवेश का भी उल्लेख किया है, यद्यपि राजनीति में इनकी कोई अभिरुचि कदापि नहीं रही है। लेकिन राजनीतिक युगबोध अत्यन्त संयम रूप से उनके संस्मरणों में उभरा है। पराधीन भारत की राजनीतिक स्थिति, देश भक्तों की शहादत तथा उन पर शासन के अनेकानेक अत्याचारों का यथातथ्य मार्मिक चित्रण भी मिलते हैं।

**साहित्यिक परिवेश** : इसके अन्तर्गत महादेवी जी ने समकालीन साहित्य सम्मेलनों, कवि गोष्ठियों आदि का निरूपण बड़े स्वाभाविक ढंग से किया है। द्विवेदी युग की अतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया में छायावाद के अभ्युदय को जो कथा लेखिका ने प्रस्तुत की है वह साहित्य के अनुसंधित्सुओं के लिए बड़ी उपयोगी है।[7]

महादेवी वर्मा की अपनी सोच है कि 'मेरे अधिकांश रेखाचित्र कहे जाने वाले शब्द चित्र' संस्मरण की कोटि में ही आते हैं, क्योंकि किसी भी क्षणमात्र की झलक पाकर मैं उसके सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया प्रायः अपने लेखों में व्यक्त कर देती हूँ।[8]

**उद्देश्य** : महादेवी जी ने अपने संस्मरणों की भूमिकाओं में इनके उद्देश्यों पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। इनका उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं है अपितु लेखिका के सामाजिक दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है। उनके संस्मरणों में मानवतावादी विचारधारा की स्वीकारोक्ति है। सामाजिक जीवन के यथार्थ बोध ने इस दृष्टिकोण को पर्याप्त बल प्रदान किया है। इन संस्मरणों में निम्नवर्गीय अशिक्षित प्रताड़ित तथा मानवतावादी पुकार को वाणी मिली है। संस्मरणों के पात्र सहनशीलता, कर्मठता, निष्काम कर्म-भावना, निश्छल स्नेह, सेवापरायणता आदि उदात्त भावनाओं के मूर्तिमान विग्रह हैं। लेखिका ने यह कहना चाहा है कि उपर्युक्त मानवीय संवेदनाएं किसी वर्ग विशेष की चहारदीवारी में ही कैद नहीं हैं बल्कि ये प्राणी मात्र के गुण-धर्म हैं।[9]

महादेवी जी ने अपने संस्मरणों में पात्रों के वाह्य व्यक्तित्व के साथ उसके आंतरिक व्यक्तित्व का विश्लेषण भी किए हैं। इनके पात्र जीवन में संघर्ष करने के लिए कटिबद्ध तथा कर्तव्य परायण हैं। इन संस्मरणों में लेखिका का निजी जीवन, भी उभर आया हैं।

**महादेवी के रेखाचित्र**

रेखाचित्र के विषय में जन-सामान्य से लेकर जड़-पदार्थ तक के सभी तथ्यों तथा प्रकारों का समावेश पाया जाता है। 'रेखाचित्र' अपनी कलाकुशलता के आधार पर मानव के बाह्य ही नहीं आभ्यांतर स्वरूप को भी उद्घाटित कर देता है। यहाँ पर भावनाओं का सुचारु चित्रांकन किया जाता है, क्योंकि इसका मुख्य विषय मनुष्य ही है। रेखाचित्र में यथार्थता का विशेष महत्व रहता है। यही उसकी प्रमुख शर्त या आधार भूमि है। इसमें अतीत की स्मृतियों का मात्र रेखांकन किया जाता है।

महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' और 'मेरा परिवार' सम्पूर्ण रूप से किसी एक – 'संस्मरण' या 'रेखाचित्र' स्वरूप में समाविष्ट न होकर दोनों प्रकारों में अपना एक-एक पैर रखते हैं; अतः इन्हें 'संस्मरणात्मक रेखाचित्र' कहना ही उचित लगता है। इनकी प्रत्येक कृति संस्मरण और रेखाचित्र की सभी विशिष्टताओं को उद्घाटित करती हुई प्रतीत होती हैं। इन दोनों साहित्य स्वरूपों में इतना साम्य दिखाई देता है कि इनका भिन्न-भिन्न विवेचन करना किसी सम्पूर्ण आकृति को खंडित करने के समान अनुभूति प्रदान करता सा प्रतीत होता है।[10]

छायावाद की प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा आधुनिक युग की एक उत्कृष्ट गद्य-लेखिका के साथ महान चित्रकर्त्री भी हैं। अर्थात कवयित्री गद्यकार एवं चित्रकर्त्री तीनों का सुन्दर समन्वय महादेवी में मिलता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि किसी भी श्रेष्ठ कलाकार की महत्ता का मापदण्ड उसकी अनुभूति की गहराई और उसकी विषय-वस्तु का फैलाव है। महादेवी वर्मा को हिन्दी जगत में कवयित्री और गद्य लेखिका दोनों रूपों में समान सम्मान मिला है।[11]

रेखाचित्र हिन्दी साहित्य की एक स्वतंत्र नवीन विधा है। इसमें लेखक कम से कम शब्दों में सजीव रूप प्रस्तुत करने को कृतसंकल्प होता है। इसकी भाव-व्यंजना अधिक तीव्र एवं मर्मस्पर्शी होता है। इसकी शिल्पविधि भी स्वतंत्र होती है। डॉ. शिवदान सिंह चौहान ने रेखाचित्र के प्रथम महत्व को स्वीकार करते हुए लिखा है – ''कला के अन्दर रेखाचित्र की एक स्वतंत्र सत्ता है, उसे पढ़ने के बाद पाठक को समाज या व्यक्ति की जीवनधारा के अगले मोड़-प्रवाहों को जानने की आवश्यकता नहीं रह जाती। वह उस पूरी तस्वीर को पढ़कर संतुष्ट हो जाता है और चूँकि रेखाचित्र एक चित्र है, इस कारण उसका वर्ण्य विषय कल्पना-प्रधान भी हो सकता है और वास्तविक भी।'' रेखाचित्र में भाव चित्रण, रूप-चित्रण, प्रकृति-चित्रण सभी कुछ होता है, साथ ही लेखक के विचारों को प्रस्तुत करने का अवकाश भी मिलता है। इसमें चरित्र-चित्रण भी होता है, परन्तु विस्तार से नहीं होता। 'पथ के साथी' के सभी रेखाचित्र व्यक्ति-प्रधान हैं। लेखिका ने हिन्दी के श्रेष्ठ छः साहित्यकारों के रेखाचित्र खींचे हैं। सबसे पहले 'प्रणाम' के रूप में कवीन्द्र रवीन्द्र का रेखाचित्र है और उसके पश्चात श्री मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, निराला, प्रसाद, पन्त, सियारामशरण गुप्त के रेखाचित्र हैं। ये सभी रेखचित्र रोचक हैं और इनमें चित्रात्मकता प्रधान है। उक्त रेखाचित्रों का वर्णन प्रथम अध्याय के अन्तर्गत परिचय के रूप में किया जा चुका है। यहाँ उनका उल्लेख पुनरुक्ति होती है इसलिए यहाँ इन छः रेखाचित्रों की तत्वगत विशेषताओं का अध्ययन अपेक्षित है।

**चित्रात्मकता** : चित्रात्मकता की प्रवृत्ति के कारण रेखाचित्र चित्रकला के अधिक निकट है। रेखाचित्र का यह प्राण तत्व है। कवीन्द्र रवीन्द्र के बारे में महादेवी जी का वर्णन चित्रात्मकता का सुन्दर उदाहरण है। लेखिका ने रवीन्द्र की आँखों की तीक्ष्णता, नाक का नुकीलापन, मुख की सौम्यता आदि के वर्णन तक ही अपने को सीमित नहीं रखा है बल्कि उनको देखने से व्यक्ति का मन उनके स्वभाव, चरित्र और गुण-दोषों पर किस दृष्टि से विचार करने लगता है, उसका भी सांगोपांग वर्णन किया है। उनकी हंसी का, उनकी कोमल उँगलियों का तथा उनकी प्रतिमा के चित्रण का जैसा वर्णन लेखिका ने किया है, लगता है रेखायें बोल उठी हैं। 'पथ के साथी' में संग्रहीत सभी रेखाचित्रों में रवीन्द्र के रेखाचित्र में जैसी विस्तृति मिलती है, वैसी अन्य साहित्यकारों के बारे में लिखते समय महादेवी जी का ध्यान उनके व्यक्तित्व और उससे सम्बद्ध विभिन्न घटनाओं पर अपेक्षाकृत अधिक केन्द्रित रहा है, क्योंकि वे सभी समकालीन थे और उनके बारे

में लेखिका को बहुत कुछ ज्ञात था। यही कारण है कि गुप्त जी के रेखाचित्र में वैसी चित्रात्मकता नहीं मिलती।[12]

**अनुभूति** : महादेवी जी के प्रत्येक रेखाचित्र में अनुभूति की प्रधानता मिलती है। रवीन्द्र की चर्चा करते हुए लेखिका ने महान साहित्यकारों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बारे में अपने अनुभूति जन्य सत्य को प्रकट किया है।

प्रसाद का रेखाचित्र प्रस्तुत करते हुए लेखिका की अनुभूति–प्रवणता इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है – ''हिमालय के नभ पर उसकी गर्वीली चोटियों से समता करता हुआ एक सीधा ऊँचा देवदार वृक्ष था। उसका उन्नत मस्तक हिम–आतप वर्षा के प्रहार झेलता है। उसकी विस्तृत शाकाओं को आंधी–तूफान झकझोरते थे और उसकी जड़ों जो एक छोटी–पतली जलधारा आँख मिचौली खेलती थी। ठिठुराने वाले हिमपात, प्रखर धूप और मूसलाधार वर्षा के बीच में भी उसका मस्तक उन्नत रखा और आँधी और बर्फीले बवंडर के झकोरे सहकर भी वह निष्कंप निश्चल खड़ा रहा, पर जब एक दिन संघर्षों में विजयी के समान आकाश में मस्तक उठाए, आलोक–स्नात वह उन्नत और हिमकिरीटिनी चोटियों से अपनी ऊँचाई नाप रहा था, तब एक विचित्र घटना घटी। जिस उपेक्षणीय जलधारा का प्रहार हल्की गुदगुदी के समान जान पड़ता था, उसी ने तिल–तिल करके उसकी जड़ों के नीचे खोखला कर डाला और परिणामतः चरम विजय के क्षणों में वह देवदास अपने चारों ओर के वातावरण को सौ–सौ ज्योति चक्रों में मथता हुआ धरती पर आ रहा।'' यह कल्पना जन्य अनुभूति प्रसाद के साहित्य क्षेत्र की चरमोन्नति और उनके असामयिक निधन की स्थिति की सूचना देता है। इस तरह के अनेक अनुभूति–श्लथ उद्‌गार इनके रेखाचित्रों में विद्यमान हैं।

**रोचकता** : रेखाचित्र में कलाकार रोचकता का समावेश करना अपना विशेष कर्तव्य समझता है। कौतूहल और बार–बार पढ़ने की लालसा जगाने का लक्ष्य से रेखाचित्रकार रोचकता की सृष्टि करता है। महादेवी जी की रोचकता सृष्टि का यह उदाहरण कितना आकर्षक है – 'हमारे शैशव कालीन अतीत और प्रत्यक्ष वर्तमान के बीच में समय–प्रवाह का पार ज्यों–ज्यों चौड़ा होता जाता है, त्यों–त्यों हमारी स्मृति में अनजाने ही एक परिवर्तन लक्षित होने लगता है। शैशव की चित्रशाला के जिन चित्रों से हमारा रागात्मक सम्बन्ध गहरा होता है, उनकी रेखाएँ और रंग इतने स्पष्ट और चटकीले होते चलते हैं कि हम वार्धक्य की धुँधली आँखों से भी उन्हें प्रत्यक्ष देखते रह सकते हैं। पर जिनसे ऐसा सम्बन्ध नहीं होता वे फीके होते–होते उस प्रकार स्मृति से धुल जाते हैं कि दूसरे के स्मरण दिलाने पर भी उनका स्मरण कठिन हो जाता है।' इसी प्रकार पन्त जी के प्रथम दर्शन के वर्णन में महादेवी जी ने ऐसी रोचकता भर दी है कि पाठक भाव–विभोर हो उठता है। कोमल प्रकृत एवं सुकुमार शारीरिक यष्टि वाले पन्त जी जब सभा में पहुँचते हैं तो उन्हें देखकर स्त्रियाँ आश्चर्यचकित हो जाती हैं। इस रोचकता के साथ पाठक पन्त जी के सम्बन्ध में और कुछ जानने की अभिलाषा लिए इस रेखाचित्र को पढ़ने के लिए

बाध्य हो जाता है। यह महादेवी के रेखाचित्र की अद्‌भुत विशेषता है।

**संवेदनात्मकता :** महादेवी जी के रेखाचित्रों में मानव हृदय को छूनेवाले वर्णन अर्थात मानव मन की संवेदना को जगा सकने वाले चित्रण अधिक सफल हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान से अपनी एक भेंट का वर्णन करते हुए उन्होंने अपनी संवेदना का परिचय दिया है। उन्होंने लिखा है – 'ऐसी कुछ क्षणों की भेंट में भी एक दृश्य की अनेक आवृतियाँ होती ही रहती थीं। वे अपने थैले से दो चमकीली चूड़ियाँ निकाल कर हँसती हुई पूछती हैं – पसंद हैं? मैंने दो तुम्हारे लिये, दो अपने लिए खरीदी थीं। तुम पहनने में तोड़ डालोगी। लाओ अपना हाथ, मैं पहना देती हूँ। पहन लेने पर वे बच्चों के समान प्रसन्न हो उठतीं।' इसी प्रकार पन्त जी की कोमलता एवं सुकुमारिता का वर्णन करती हुई उनके संघर्षो का जब लेखिका वर्णन करती है तब पाठक की संवेदना जाग्रत हो उठती है। यह चित्रण इस संवेदना को परखने के लिए पर्याप्त है – ''आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता की ऊँची सीढ़ी से विपन्नता की अन्तिम सीढ़ी तक उन्होंने अनेक उतार–चढ़ाव देखे हैं। जिस अल्मोड़े में उनके कई मकान थे, वहीं किराये की छोटी कोटेज में रहते हुए भी न उनकी हँसी मलिन हुई और न अभिमान आहत हुआ। वे किसी वीतराग दार्शनिक की तटस्थता की साधना नहीं कर रहे थे वरन् उनकी स्थिति उस बालक से समानता रखती थी जो अपने घरोंदे के बनाने में जितना आनन्द पाता है, मिटाने में उससे कम नहीं।'' इन पंक्तियों के पढ़ने के बाद पाठक पन्त जी के प्रति अधिक संवेदनशील हो उठते हैं। उनके बालक जैसे स्वभाव पर वह रीझ जाता है। घरौंदे बनाने की बात कहकर महादेवी जी ने पाठक को अपनी सारी संवेदना उड़ेल देने को विवश कर दिया है। पन्त की तरह प्रसाद के जीवन की संख्या बेला का मार्मिक चित्र देखकर हृदय द्रवीभूत हो जाता है और गहरी संवेदना में डूब जाता है।

**सरलता :** रेखाचित्र में सरलता उसका अपरिहार्य अंग है। व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते समय सरलता की अपेक्षा होती है। महादेवी जी ने इसे अपने रेखाचित्रों में प्रधानता दी है। जिस सरलता के साथ व्यक्ति और उसकी परिस्थितियों का आंकलन करती हैं उससे पाठक सहज प्रभावित हो जाता है। 'पथ के साथी' में गुप्त जी के स्वभाव का उल्लेख करते हुए उनकी असहिष्णुता का भी वे वर्णन अत्यन्त सरलता से करती हैं। रायकृष्ण दास और उनके एक अभिन्न बन्धु को गुप्त जी के पास याचना के लिए जाकर जो फटकार सुननी पड़ी थी उसका वर्णन देखिये – ''यदि मिट्टी को प्रतिबिम्ब ग्रहण करने का वरदान मिला होता तो वह उस कक्षा की दीवारों पर कवि–अभ्यासगत की उग्रता आज भी अंकित होती और यदि स्वर को मिटाने का अभिशाप न मिला होता तो उस वातावरण में निर्वेद में रौद्र रस की प्रतिध्वनि अब तक गूँजती होती। याचक की सहनशीलता उनमें नहीं है पर आत्मीय जनों का अनुरोध अस्वीकार करने की दृढ़ता का भी उनमें अभाव है।'' यह सरलता इनके रेखाचित्रों की विशेषता है। केवल व्यक्तियों के रेखांकन तक ही लेखिका की सरलता सीमित नहीं है बल्कि इसके अतिरिक्त युग–सत्यों

एवं दार्शनिक तथ्यों के प्रस्तुतिकरण में भी यह प्रवृत्ति लक्षित होती है।[13]

**भाषा का सहज सुबोध रूप** : महादेवी जी के रेखाचित्रों में प्रयुक्त भाषा का सहज और सुबोध रूप अनूठा है। इसमें भाषा का वह प्रिय रूप मिलता है, जिसे जनसाधारण पढ़ एवं समझकर उसका पूरा आनन्द ले सकता है। महादेवी जी का भावाकुल कवि हृदय अपनी छटा दिखा ही जाता है। स्थान-स्थान पर उनकी सरसता लक्षित होती चलती है। करुणा-विगलित महादेवी का कलाकार अपनी अभिव्यक्ति को दुबोध बनने से पूरी तरह बचा ले जाता है। रेखाचित्र में अंकित पात्रों के सहज-स्वाभाविक जीवन में किसी प्रकार की अस्पष्टता या दुरूहता नहीं रहती। उपयुक्त शब्द-चयन, छोटे-छोटे वाक्य कहीं-कहीं स्वाभाविक संवाद, भावावेशमय सहज-सरल चित्रण आदि गुणों के कारण इनके रेखाचित्र बड़े आकर्षक बन पड़े हैं।

**उद्देश्य** : 'पथ के साथी' में निरूपित रेखाचित्रों में महादेवी का उद्देश्य मात्र मनोरंजन करना नहीं है। इनके रेखाचित्रों में वस्तु, व्यक्ति अथवा घटना का सम्पूर्ण चित्र बड़ी रोचकता और चित्रात्मकता के साथ प्रस्तुत हुआ है। लेखिका का उद्देश्य अपने रेखाचित्र को उसकी सभी तत्वगत विशेषताओं से ओत-प्रोत कर देना है। यहाँ महादेवी ने अपने को एक सफल रेखाचित्रकार की भूमिका में प्रतिष्ठित किया है।

महादेवी जी के रेखाचित्र उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा की पहचान कायम करते हैं। जिस बारीक बात को गद्य की काव्यात्मकता कहते हैं, वह महादेवी के रेखाचित्रों में अत्यन्त विकसित रूप में दिखाई पड़ती है। इनमें चित्रविधान यथार्थ जगत् के अंकन के लिए हुआ है, जो सौंदर्य की चकाचौंध से चौंधियायी कवि दृष्टि की पकड़ से बाहर का जगत् है।[14]

## महादेवी के निबन्ध

'गद्यम् कवीनां निकषं वदन्ति' – कवि की उक्ति का तनिक विस्तार करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है – 'यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।' साहित्यकार अपनी स्वानुभूतियों को गद्य पद्य दोनों में अभिव्यक्ति देता है परंतु गद्य में सरलता, सहजता और प्रभावोत्पादकता विशेष रहती हैं। निबंध भी गद्य साहित्य का एक स्वस्थ विशिष्ट अंग है, जिसमें व्यक्तित्व के आंतरिक और बाह्य दोनों रूप उभर कर सामने आते हैं। सामान्यतः संपूर्ण व्यक्तित्व के तीन क्रम होते हैं, जिन्हें 'हड़', 'इगो' और 'सुपर इगो' कहा जाता है। इन तीनों का एकीकृत और संयत संगठन ही स्वस्थ व्यक्तित्व कहलाता है। 'अहं' को साहित्य रूप में उद्घाटित करने वाली सिर्फ एक निबंध कला ही है। निबंध में पाठक की रूचि और समझ का भी योग्य ध्यान रखा जाता है। यह कला अत्यंत रोचक और सजीव है।[15]

हिन्दी निबन्ध के विकासक्रम में छायावाद युग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। निबन्ध का विकास अभी चल ही रहा है। इसमें सबसे पुष्ट, उत्कृष्ट और गौरवपूर्ण योगदान महादेवी जी का रहा है। लेकिन महादेवी के निबन्धों की चर्चा करने के पूर्व आधुनिक युग के

अन्य निबन्धकारों पर दृष्टिपात करना अपेक्षित है। वर्तमान निबन्ध-लेखकों को तीन वर्णो में रखा जा सकता है :

1) कवि और निबन्धकार : जैसे प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी, दिनकर, अज्ञेय आदि।

2) आलोचक और निबन्धकार : जैसे डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, नन्द दुलारे बाजपेई, शान्तिप्रिय द्विवेदी, जैनेन्द्र आदि।

3) मार्क्सवादी आलोचक और निबन्धकार : जैसे डॉ. राम विलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान, डॉ. नामवर सिंह आदि।

प्रथम वर्ग के निबंध-लेखकों की भाषा-शैली संस्कृत निष्ठ है, जिसमें लाक्षणिकता और रूपकों का बाहुल्य है। इस वर्ग के निबन्धकार क्योंकि पहले भावुक हैं और बाद में निबन्धकार, अतः इनके निबंधों में भावुकता का प्राधान्य एवं लम्बे-लम्बे समासपूर्ण वाक्यों का होना स्वाभाविक है। शुक्ल युग से ही निबंध-साहित्य उत्तरोत्तर प्रगति को प्राप्त हुआ है और इसमें भाषा, भाव-शैली, विषय आदि की दृष्टि से विशेष उन्नति हुई। वर्तमान वैज्ञानिक युग ने भी इसकी प्रगति में बड़ा योग दिया है। जहाँ साहित्य की अन्य विधाएँ कथन की अप्रत्यक्ष विधि अपनाती हैं, वहाँ निबन्ध रामबाण की तरह सीधा प्रहार करता है। निबंध रामबाण है, प्रभाव डालने में अचूक और क्षिप्रगति-युक्त है।[16]

महादेवी जी के निबन्धों को मुख्यतः दो वर्गों में रखा जा सकता है : 1) आलोचनात्मक या विवेचनात्मक या मननशील निबन्ध और 2) ललित निबंध। प्रथम वर्ग के अन्तर्गत व्यंग्य, क्षोभ, भावुकता आदि का प्रयोग नहीं के बराबर मिलता है और उसकी शैली की दृष्टि वाक् चातुर्य से अनुप्राणिगत होती है। महादेवी ऐसे निबन्धों में सफल गोताखोर की भाँति अपने विचारों के गहन सागर में इतने सधे हुए ढंग से गोता लगाती हैं कि तट पर खड़े दर्शकों को पानी के ऊपर एक बुलबुला भी दृष्टिगोचर नहीं होता। जब तक पाठक स्वयं सफल गोताखोर नहीं हैं, वह निबन्धकार की आत्मा को नहीं पा सकता, सागर-मन्थन के रहस्य को नहीं पहचान सकता, अमृत जल नहीं प्राप्त कर सकता। इस कोटि के निबन्धों के अन्तर्गत महादेवी जी की विवेचनात्मक गद्य, 'साहित्यकार की आस्था' तथा 'क्षणदा' के कुछ निबन्ध आते हैं। विवेचनात्मक निबंधों की कोटि में 'आधुनिक कवि' और 'दीप-शिखा' आदि काव्य ग्रन्थों में लिखी उनकी भूमिकाएँ आती हैं। ललित निबंधों के दो स्वरूप महादेवी के गद्य में मिलते हैं - ''संस्मरणात्मक और नारी विषयक।''[17]

लेखिका की दृष्टि में निबन्ध-कला का उद्देश्य इतना ही है कि ''किसी को इन क्षणों में मेले में अपने खोए, पर परिचित कुछ क्षण मिल सकें।'' उन्होंने इसी कामना और उद्देश्य की पूर्ति-हेतु निबन्ध लिखे हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए महादेवी ने जिस कौशल को अपनाया और चिंतन की कड़ियों की विचार-शृंखला में जिस कला का प्रयोग

किया, अपने निबंधों को सत्य, शिव और सुन्दर रूप देने में जिस अभिव्यंजना प्रणाली से काम लिया, वह उल्लेखनीय है।

महादेवी के निबन्धों का अध्ययन करने के लिए उसे निम्नलिखित वर्गों में रखा जा रहा है :

**विवेचनात्मक निबन्ध :** इस कोटि के निबन्ध 'क्षणदा' में एकत्र हैं।[18] 'क्षणदा' शब्द का अर्थ 'रात्रि' होता है। यहाँ पर महादेवी जी के निबंधों से ऐसा प्रतीत होता है, मानो वे रात्रि के सन्नाटे में विहार कर रहे हैं।, जिस प्रकार रात्रि तीन प्रहरों में विभाजित हो जाती है उसी तरह से 'क्षणदा' के निबंधों को भी तीन भागों में बाँटा जा सकता है।[19]

निबंध संकलन 'क्षणदा' में भारतीय कला, संस्कृति आदि पर विचार मिलते हैं। 'क्षणदा' में लेखिका के कुछ बारह निबंध संग्रहीत हैं। पहले निबंध में उन्होंने भगवान बुद्ध तथा उनके द्वारा स्थापित बौद्ध धर्म के बारे में अपना मत प्रकट किया है। बुद्ध को वे आदर्श पुरुष मानती हैं।

जब ब्राह्मण धर्म एक सीमित क्षेत्र में संकुचित रूप ले रहा था तब संस्कृत भाषा की साधारण जनता की भाषा बनाकर उनके हृदय में अपना स्थान बना लेने की दिशा में बुद्ध ने महत्वपूर्ण कार्य किया। बौद्ध धर्म में कही हुई बातें भारतीय विचारधारा से बहुत हद तक मिली हुई होने पर भी अपनी दिशा में मौलिक है। महादेवी इस निबंध में बुद्ध की विजय मनुष्यता की देवत्व पर विजय मानती हैं।

'क्षणदा' के एक दूसरे निबन्ध में लेखिका ने भारतीय संस्कृति पर विचार किया है। 'संस्कृति' शब्द को परिभाषित करती हुई वे लिखती हैं – ''संस्कृति जीवन के बाह्य और आन्तरिक संस्कार का क्रम होता है और इस दृष्टि से उसे जीवन को सब ओर से स्पर्श करना ही होता है। इसके अतिरिक्त वह निर्माण ही नहीं, निर्मित तत्वों की खोज भी है। भौतिक तत्व में मनुष्य प्राणी तत्व को खोजता है, प्राणित्व में मनस्तत्व को खोजता है और मनस्तत्व में तर्क तथा नीति को खोज निकालता है, जो उसके जीवन की समष्टि में सार्थकता और व्यापकता देते हैं। इस प्रकार विकास पथ में मनुष्य का प्रत्येक पग अपने आगे सृजन की निरन्तरता और पीछे अन्वेषण छिपाए हुए हैं।''[20]

धर्म और संस्कृति की व्याख्या के अतिरिक्त महादेवी ने कला के संबंध में भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। उनकी दृष्टि में कलाकार का महान कर्तव्यअपनी कला में सत्य, शिव और सुन्दर तीनों की प्रतिष्ठा क़रना है। कला उनके अनुसार रागात्मत हृदय की कलात्मक अभिव्यक्ति है। कलाकार का लक्ष्य हमारे जीवन की सुन्दर–असुन्दर, दुर्बल–सबल, पूर्ण–अपूर्ण सभी वस्तुओं में सामंजस्य करना है। कला की व्यावहारिकता के सन्दर्भ में उनका विचार अन्य चिंतकों से भिन्न है। वे कला को जीवन से सम्बद्ध मानती है।[21]

क्षणदा में महादेवी ने भारत की राष्ट्रभाषा, आज की वैज्ञानिक समस्या, हमारे जीने

के स्तर आदि के बारे में अपना स्पष्ट विचार प्रकट किया है। 'हमारा देश और राष्ट्रभाषा' निबंध में उन्होंने देश की तत्कालीन परिस्थितियों का उल्लेख किया है। इसके साथ ही देश की एकता और अखंडता के लिए राष्ट्रभाषा को परम आवश्यक मानती हैं। हिन्दी लिपि और हिन्दी भाषा के बारे में उनकी स्पष्ट धारणा है कि यह विश्व की अन्य लिपियों और भाषाओं की अपेक्षा सरल है। इनके विचार इन शब्दों में देखे जा सकते हैं – ''भाषा को सीखना उसके साहित्य को जानना है और साहित्य को जानना देश में मानव एकता की स्वानुभूति को अभिव्यक्त करना है। अपने संदेश को सार्थक करने के लिए हिन्दी को केवल 'कण्ठ का व्यायाम' न होकर 'हृदय की प्रेरणा' भी बनाना है। राष्ट्रभाषा के महत्वाँकन के साथ–साथ लेखिका देश की अन्य समस्याओं पर भी विचार करती है। 'हमारे वैज्ञानिक युग की समस्या' शीर्षक निबंध में वे निकटता की दूरी से सतर्क रहने की राय देती हैं।

विवेचनात्मक निबंधों के अन्तर्गत कुछ ऐसे निबंध भी लेखिका ने लिखे हैं जो 'क्षणदा' के उपर्युक्त निबन्धों से स्वरूपतः भिन्न है। 'क्षणदा' के अधिकांश निबंध मूलतः वैचारिक हैं और भारतीय धर्म, संस्कृति, कला, दर्शन, देश आदि पर आधारित हैं। लेकिन विवेचनात्मक निबंधों का एक अन्य रूप भी इनके गद्य में प्राप्त होता है, जिसे अध्ययन–विश्लेषण की सुविधा के लिए साहित्यिक निबंध को संज्ञा दी जा सकती है। ऐसे निबन्ध क्षणदा के तीन निबन्धों के अतिरिक्त उनके काव्य संग्रहों की भूमिकाओं में प्राप्त होते हैं। क्षणदा के तीन निबंध हैं –

(1) कुछ विचार, (2) दोष किसका तथा, (3) साहित्य और साहित्यकार।

तीनों निबन्धों में हिन्दी साहित्य के विस्तृत क्षेत्र की विभिन्न शाखाओं के बारों में लिखा गया है। साहित्यकार के कर्तव्यका विशद विवेचन करते हुए उसे समाज के प्रति महान उत्तरदायी सिद्ध किया गया है। लेखिका की दृष्टि में साहित्यकार का कर्तव्यकेवल 'स्वांतः सुखाय' न रहकर 'समाज हिताय' भी होता है। साहित्य में व्यक्ति के निजीपन का विशेष महत्व नहीं है। साहित्यकार एक ओर बन्धन में रहने वाले मानवमन को समष्टि में बाँधकर उसे किसी उद्देश्य की ओर प्रवृत्त करता है और दूसरी ओर मानव–स्वभाव की विविधताओं को उसके सामने प्रस्तुत कर सामाजिक मूल्यांकन को समृद्ध करता है।[22]

**वर्णनात्मक निबन्ध** : 'क्षणदा' में दो ऐसे निबंध है, जिनमें वर्णन की प्रधानता है। ये निबंध हैं – 'स्वर्ग का एक कोना' तथा 'सूई दो रानी'। पहला निबंध उनकी कश्मीर की प्राकृतिक सुषमा से अविभूत होकर लेखिका ने उसे 'स्वर्ग का एक कोना' कहा है।[23]

दूसरे निबन्ध में बद्रीनाथ के निकट सूई माँगने वाली स्त्रियों का स्वरूप लेखिका के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। वहाँ सूई की भिक्षा–वृत्ति पर लेखिका को आश्चर्य होता है। बद्रीनाथ महान तीर्थ स्थान होते हुए भी अन्य तीर्थ स्थानों की अपेक्षा उपेक्षित है। वहाँ गन्दगी अधिक दिखाई पड़ी, अव्यवस्था का प्रभाव देखा गया। मंदिर में दर्शन की अनुमति केवल सम्पन्न व्यक्तियों को ही मिलती थी और सामान्य प्रवेश से वंचित रह

जाते थे। इस तरह इन दोनों निबंधों में वर्णन की प्रधानता होने के कारण इन्हें वर्णनात्मक निबन्धों की कोटि में रखा जा सकता है। इन निबन्धों के अतिरिक्त महादेवी की निबन्ध गरिमा के प्रमाण 'आधुनिक कवि', 'दीपशिखा', 'यामा', 'संधिनी' आदि काव्य-संग्रहों का संक्षिप्त में परिचय मिलता है।

**आधुनिक कवि की भूमिका** : महादेवी की निबन्ध-कला का श्रेष्ठतम रूप 'आधुनिक कवि' की भूमिका में मिलता है। इस निबन्ध में मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक जीवन की व्याख्या करते हुए लेखिका ने जीवन के सच्चे मूल्य एवं मान्यताओं का विवरण दिया है। यहाँ उन्होंने काव्य और मानव के सम्बन्ध पर भी विचार किया है। इसके साथ ही काव्य में छायावाद एवं रहस्यवाद के बारे में भी मन्तव्य प्रकट हुए हैं।[25] इस निबन्ध में अभिव्यक्त विचार लेखिका के ही शब्दों में – ''मनुष्य अपने मानसिक जगत् की दुरूहता को नष्ट करने का प्रयास करता है और साथ ही अपने बाह्य संसार की समस्याओं को सुलझाने का भी प्रयत्न करताहै। साहित्य मनुष्य की बुद्धि और भावना को मिलाने वाला पुण्य क्षेत्र है। साहित्य के लिए न मनुष्य का अन्तर्जगत त्याज्य है और न ही भुलाने योग्य क्योंकि साहित्य का विषय सम्पूर्ण जीवन है। जीवन में कविता का वही महत्व है, जो कठोर स्त्रियों से घिरे कक्ष में वायुमंडल को अनायास ही बाहर के उन्मुक्त वायुमण्डल से मिला देने वाले वातायन को मिला है। .........कविता हमारे व्यष्टि-सीमित जीवन को समष्टि-व्यापक जीवन तक फैलने के लिए ही व्यापक सत्य को अपनी परिधि में बाँधती है।''

छायावाद के आलोचकों को जवाब देती हुई महादेवी कहती हैं कि यह शब्द हमारे लिए नया भले हो पर इसकी मूल धारणा नई नहीं है। इसका सम्बन्ध हमारी प्राचीन संस्कृति से है। छायावाद का महत्वांकन करते हुए उन्होंने लिखा है कि दीर्घकाल से कविगण शरीर के अतिरिक्त और कहीं भी सौंदर्य का लेशमात्र नहीं ढूँढ़ पाते थे, परन्तु छायावाद में प्रकृति के उज्जवल एवं अनुपम सौन्दर्य की ओर कवि की दृष्टि गयी तो मुड़ने का नाम न ले सकी।[24]

**'दीपशिखा' की भूमिका** : इसकी भूमिका 'चिंतन के कुछ क्षण' नाम से प्रकाशित है। इसमें महादेवी सत्य को काव्य का साधन तथा सौंदर्य का साध्य मानती हैं। व्यक्ति का व्यावहारिक जीवन संकल्प-विकल्प, सुख-दुख, कल्पना-स्वप्न आदि कड़ियों की शृंखला में बँधा रहता है। बाह्य जगत और आभ्यंतर जगत में व्याप्त सत्य की अभिव्यक्ति के लिए ही मानव ने काव्य तथा अन्य कलाओं का आविष्कार किया होगा। बुद्धि और हृदय एक दूसरे के पूरक होते हुए भी एक ही पथ से आगे नहीं बढ़ते। अनुभूति अपनी सीमा में अत्यधिक सबल है पर बुद्धि नहीं। इसीलिए अपना दुख किसी को भी अत्यधिक वेदना पहुँचाता है, औरों को दुख उतना नहीं। सत्य की प्राप्ति के लिए काव्य और कलाओं में सौन्दर्य का आश्रय लिया जाता है, जो जीवन की पूर्णतम अभिव्यक्ति पर आश्रित है।

महादेवी के शब्दों में – ''प्रत्येक सच्चे कलाकार की अनुभूति प्रत्यक्ष सत्य ही नहीं,

अप्रत्यक्ष सत्य का भी स्पर्श करती है, उसका स्वप्न वर्तमान ही नहीं, अनागत भविष्य को भी रूपरेखा मैं बाँधता है और उसकी भावना यथार्थ ही नहीं संभाव्य यथार्थ को भी मूर्तिमत्ता देती है।''[25] महादेवी जी ने एक सच्चे कलाकार की अनुभूति का प्रत्यक्ष अप्रत्येक्ष स्पर्श कराके काव्यकला तथा चित्रकला का समन्वय करने का प्रयत्न किया है।

**यामा की भूमिका** : इसके सम्बन्ध में महादेवी लिखती हैं – ''यामा मेरे अन्तर्गत के चार यामों का छायाचित्र है। ये याम दिन के हैं या रात के यह कहना मेरे लिए असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। यदि ये दिन के हैं तो इन्होंने मेरे हृदय को श्रम से कलांत बनाकर विश्राम के लिए आकुल नहीं बनाया और यदि रात के हैं तो इन्होंने अन्धकार में मेरे विश्वास को खोने नहीं दिया। अतएव मेरे निकट इनका मूल्य समान है और समान ही रहेगा।''

'यामा' की भूमिका में 'रश्मि' की भूमिका भी जोड़ी गयी है और इसमें भी आप वस्तुतः जीवन के सुख–दुख की ही व्याख्या करती हैं। आप लिखने में सुख और न लिखने में जीवन का अभाव अनुभव करती हैं। महादेवी मनुष्य को ही एक सजीव कविता समझती हैं और कवि की रचना को उसका शब्द–चित्र मात्र।

**'संधिनी' की भूमिका** : 'संधिनी' की भूमिका में महादेवी ने युग–बोध तथा काव्य–बोध, अनुभूति, स्वानुभूति और काव्यानुभूति काव्य का सत्य और यथार्थ, काव्य में छन्द और लय, काव्य में गेयता आदि के सन्दर्भ में अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए हैं। युगबोध तथा लेखिका में मानव जीवन के रहस्य पर जटिल परिवर्तनों की व्याख्या करती हैं। वे मनुष्य के जीवन को उसके अन्तःबाह्य परिवेशों का क्रिया–प्रतिक्रियात्मक सम्पर्क स्थापित करती है और जीवन को हमेशा गतिशील कहती हैं।[26]

**साहित्यकार की आस्था** : महादेवी की दृष्टि में आस्था अस्तित्व और स्थिति का समन्वयात्मक पर्यायवाची शब्द है। उसका सम्बन्ध जीवन के विकास–क्रम से जुड़ा है। आस्था संस्कारों से अदभुत होती है। उसका प्रसार और व्याप्ति व्यक्तिगत अनुभवों की उपलब्धि है। आस्था का अर्थ स्वीकारोक्ति भी है। उसका किसी सामाजिक या व्यापक जीवन–लक्ष्य से भी सम्बन्ध है। साहित्यकार को ही नहीं सामान्य व्यक्ति को भी अपनी आस्था में विराद मानव का कर्तव्य संभालना पड़ता है। लेखिका के शब्दों में – ''माता जिस प्रकार आस्था के बिना अपने रक्त से संतान का सृजन नहीं कर सकती। साहित्यकार भी गम्भीर विश्वास के बिना अपनी साहित्य सेवा का सृजन नहीं कर सकता। यह आस्था सृजन की दृष्टि से व्यष्टिगत होने पर भी प्रसार की दृष्टि से समष्टिगत है।''

**रहस्यवाद** : रहस्यवाद के सम्बन्ध में परम्परा से चली आ रही मान्यताओं के किंचित् भिन्न अर्थ महादेवी ने लिया है। महादेवी के शब्दों में रहस्यवाद ने ''पराविधा की अपार्थिवता ली, वेदान्त के अद्वैत की छाया मात्र ग्रहण की, लौकिक प्रेम से तीव्रता उधार ली और इन सबको कबीर के सांकेतिक दाम्पत्य भाव–सूत्र में बाँधकर एक निराले स्नेह–सम्बन्ध की सृष्टि कर डाली, जो मनुष्य के हृदय को पूर्ण अवलम्बन दे सका, उसे पार्थिव

प्रेम के ऊपर उठा सकता तथा मष्तिस्क को हृदयमय और हृदय को मस्तिष्कमय बना सकता।''

**सामयिक समस्यायें** : सामयिक स्मस्याओं के बारे में महादेवी ने कई स्थानों पर विचार किया है। ''शृंखला की कड़ियाँ'' में नारी समस्या का समाधान प्रस्तुत है तो 'क्षणदा' में समाज की अन्य समस्याएँ। काव्य संग्रहों की भूमिकाओं में भी समस्याएँ वर्णित हैं, पर वे साहित्यिक हैं। इस निबन्ध में कवि की अनुभूति तथा छायावादी एवं यथार्थवादी काव्य में उसकी अभिव्यक्ति आदि युग की परिस्थितियों के अनुसार कैसे बदली हुई है, इसकी चर्चा की है। साथ ही जीवन में पुरुष के नारी के सम्बन्ध में क्या विचार थे ? इसका भी उल्लेख मिलता है। राजनैतिक क्षेत्र में आप गाँधीवाद एवं साम्यवाद की चर्चा करती हैं। कला और सौन्दर्य की व्याख्या भी इस निबन्ध का एक अंग है।

**याथार्थ और आदर्श** : इस निबन्ध में लेखिका ने यथार्थ और आदर्श की सुन्दर मीमांसा की है। आजकल यथार्थ के नाम पर जो वासना का वर्णन किया जा रहा है, उससे लेखिका क्षुब्ध हैं। उनका कहना है कि हमारे मन की वासनाएँ ही यथार्थ नहीं है और उसको व्यक्त करना ही यथार्थवाद नहीं है। यथार्थ और आदर्श की सीमाओं को समझने के लिए कवि को जीवन की अखंडता एवं व्यापकता से परिचित होना पड़ेगा। यथार्थ को सुन्दर या असुन्दर बनाना व्यक्ति के स्वयं का वरदान अथवा अभिशाप है। आदर्श हमेशा सुन्दर ही रहेगा, पर यथार्थ के सौन्दर्य में ही जगत का सौन्दर्य है और जगत की सुन्दरता पर ही व्यक्ति की उन्नति निर्भर करती है।[27]

इस प्रकार हिन्दी निबन्धकारों में महादेवी जी का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके निबन्ध साहित्य की अमूल निधि हैं। महादेवी के निबन्ध यद्यपति साहित्य और समाज की विविध समस्याओं की लक्ष्य करके लिखे गए हैं, तथापि विषय वस्तु की दृष्टि से उनमें एक निष्ठता है। अपने विवेचनात्मक निबन्धों तथा विभिन्न काव्य संग्रहों की भूमिकाओं में विशुद्ध शास्त्रीय, बौद्धिक और तार्किक विवेचन है। रहस्यवाद शीर्षक निबन्ध में उन्होंने निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। यथार्थवाद और आदर्शवाद में इसी प्रकार प्रवृत्ति पदक अध्ययन, सैद्धान्तिक मीमांसा और काव्य समीक्षा के तत्व विद्यमान हैं। इस प्रकार महादेवी का निबन्ध साहित्य अन्तर्निहित – गूढ़ निष्कर्षो के कारण श्रेष्ठ है। साहित्य की सामूहिक प्रवृत्तियों के साथ उन्होंने अपनी विचारधारा का प्रामाणिक प्रस्तुतिकरण किया है। लेखिका सांस्कृतिक अन्वेषण, सुरुचिपूर्ण शैली, तदनुरूप भाषा और भाव–सम्पन्न निष्कर्ष प्रतिपादित करते हैं।[28]

महादेवी जी के प्रत्येक निबंध में हमें तत्कालीन समसामयिक परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। साथ ही समाज में प्रचलित प्राचीन परंपराओं को उजागर करती है। उनके लेखों में समाज, व्यक्ति को जाग्रत करने का प्रयत्न हुआ है इसीसे हम कह सकते हैं कि महादेवी जी श्रेष्ठ निबंधकार भी हैं।

## संदर्भ सूची


1. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 39–40
2. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 40–42
3. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 43–45
4. वैश्वीकरण एवं हिन्दी गद्य साहित्य, डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल प्रकाशक : अभय प्रकाशन, 6ए/540, आवास विकास हंसपुरम, कानपुर। पृष्ठ 81
5. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 46
6. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 47
7 महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 48
8. वैश्वीकरण एवं हिन्दी गद्य साहित्य, डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल प्रकाशक : अभय प्रकाशन, 6ए/540, आवास विकास हंसपुरम, कानपुर। पृष्ठ 71
9. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 49
10. महादेवी वर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. विमलेश तेवतिया, प्रकाशक : अमर प्रकाशन, सदर बाजार, मथुरा, उत्तरप्रदेश, पृष्ठ 156
11. महादेवी के रेखाचित्र – डॉ. सामंत बी मकवाणा, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य संपादक : डॉ. एन आर. परमार, प्रकाशक : नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कालेज वल्लभ विद्यानगर (गुजरात) पृष्ठ 331
12. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 59–60
13. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 61–63
14. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 64
15. महादेवी वर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. विमलेश तेवतिया, प्रकाशक : अमर प्रकाशन, सदर बाजार, मथुरा, उत्तरप्रदेश पृष्ठ 182
16. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 67–68
17. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 68
18. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 69
19. महादेवी वर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. विमलेश तेवतिया, प्रकाशक : अमर प्रकाशन, सदर बाजार, मथुरा, उत्तरप्रदेश। पृष्ठ 185
20. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 70
21 महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 71
22. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 72–73
23. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 74
24. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 74–75
25. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 76
26. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 76–77
27. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 79
28. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, पृष्ठ 82